कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व

आधुनिकता की अवधारणा एवं परिभाषा

जैसे आधुनिकता की अगली कड़ी उत्तर-आधुनिकता है वैसे ही परंपरा की कड़ी का विकास आधुनिकता है। यह परिवर्तन या विकास एक सतत प्रक्रिया का परिवर्तन है। और इस सातत्य प्रक्रिया में ही सभ्यता व संस्कृतियों का विकास हुआ है। एक ही संस्कृति या सभ्यता में विकास के जो अलग-अलग स्तर पाए जाते है। वह इस इस विकास या परिवर्तन की सतत प्रक्रिया के कारण होता है। आधुनिकता का आगमन विकास की सातत्य प्रक्रिया का अंग है। यह सतत विकास होता आया है और यह होता रहेगा। जैसे आधुनिकता को अपदस्थ करके उत्तर-आधुनिकता आया वैसे ही उत्तर-आधुनिकता को अब भूमंडलीकरण अपदस्थ कर रहा है। इस तरह से आगे भी परिवर्तन होता रहेगा। क्योंकि यह एक प्रक्रिया है। सभ्यता व संस्कृति के विकास की प्रक्रिया में जो रीति-रिवाज पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे है और उनके साथ हमारा उत्साह बना हुआ है वह सब परंपरा है। आधुनिक काल में जो परिवर्तन हुए है। आज जो आधुनिक है और हमारी सभ्यता व संस्कृति का हिस्सा है कल वही हमारी परंपरा का हिस्सा हो जायेगे। इस तरह आधुनिकता की जो अवधारणा है वह विज्ञान पर आधारित एक सोच है। जो विज्ञान के बदलाव के साथ निरंतर परिवर्तनशील है। आधुनिकता की अवधारणा कोई स्थिर अवधारणा नहीं है। यह समय, समाज व नयी तकनीक के साथ निरंतर बदलते रहने वाली एक क्रिया है। और यह निरंतर प्रयोग की अवस्था में है। नए की खोज की अवस्था में है। पुराने से नए व बेहतर की खोज के लिए तत्पर है। इसे अपने पुराने से बहुत आत्मीयता नहीं है। बल्कि इसे अपने नए पर भरोसा ज्यादा है। इसके साथ ही आधुनिकता जीवन के बने बनाए ढर्रे को तोड़ती है। हमारे मूल्य, हमारी सामाजिक संरचना, हमारे विचार, हमारी पारिवारिक स्थितियाँ, हमारे सोचने का ढंग इन सब व्यवस्थाओं में परिवर्तन होता है। और इस परिवर्तन में कई बार भारतीय समाज बड़ी उत्सुकता दिखाता है तो कई बार भयभीत भी होता है।

आधुनिक, आधुनिकता, आधुनिकीकरण, आधुनिकतावाद शब्द चिर नवीन शब्द है। जो पुराने से पुराने प्रयोग में भी नवीनता का बोध कराते है। मानव सभ्यता के विकास की सतत प्रक्रिया को भी आधुनिकता के संदर्भ में इंगित किया गया है। आधुनिकता शब्द का प्रयोग मुख्यतः दो अर्थों में किया जाता है:- पहला कालवाचक और दूसरा नवीन मूल्य एवं विचार अवधारणाओं के संदर्भ में। हिंदी साहित्य में आधुनिकता की सुगबुगाहट 19वीं शताब्दी के मध्य से होती है। यह सुगबुगाहट नए विचारों एवं नए भाव भूमियों की सुगबुगाहट थी। जिसमें साहित्य व समाज अपनी परंपरागत धारणाओं के साथ-साथ नए भावभूमि एवं विचारों को अपनाना शुरू करता है। और इससे होता यह है कि हमारे समाज में हमारे जीवन पद्धति में जो कुछ भी विकृत था, कुंठित था, रूढ़िवादी था, अतार्किक था या जो अप्रासंगिक होता जा रहा था। इन सबको छोड़ते हुए समाज में जो नयी विचारधाराएं आयी जो समय की मांग के साथ आयी और जो अपनी सार्थकता के साथ आयी उस विचारधारा को आधुनिकता का मार्ग कहा गया। आधुनिक विचारधारा कहीं गई। जिसमें किसी भी प्रकार के रूढ सामाजिक, सांस्कृतिक व परंपरागत रूढ़ विचारों को रास्ते का रोड़ा नहीं बनने दिया गया। इस बदल रहे परिवेश में साहित्य ने जब अपनी पुरानी रूढ मान्यताओं को तोड़कर नए सांचे, नए विचार, नए भावभूमियों, नई पृष्ठभूमि आदि को अपनाता है तो उसे हम आधुनिक साहित्य कहते हैं। जिसमें हर विचार तर्कसंगत एवं रूढी परंपरा की बजाए प्रगतिशीलता पर आधारित हैं। आधुनिक युग में बहुत कुछ भारत अपने वैदिक परंपरा के आदर्श से स्खलित हो कर विश्व के नए भाव बोध के साथ जुडने लगता है। आधुनिक भावबोध ने परंपरा के प्रति नकारात्मकता को भी किसी न किसी रूप में फैलाया हैं। जिसके चलते यह मान्यता विकसित होती चली गई की जो परंपरागत है वह पिछड़ा हैं या परंपरा को पिछड़ेपन की निशानी मान ली गई। ऐसी स्थिति में लोगो का स्वाभाविक झुकाव आधुनिकता की तरफ हुआ। यह पिछड़ेपन की बढ़ती हुई परंपरा को भले ही छिपाने के लिए हुआ पर हुआ। और आज की स्थिति ऐसी है कि अब हम फिर से उसी

परंपरा की तरफ फिर से उन्मुख हैं। जैविक खेती। मोटे अनाजों की मांग, हाथ से निर्मित सामानों की बढ़ती मांग, यह सब बताता हैं कि हम फिर से उसी तरफ बढ़ रहे है जहां से चले थे। यह चीजें आधुनिक लग सकती है जबकि ये सब हमारी परंपरा में थी पर आधुनिकता ने उसे अपदस्थ किया था। आज वे फिर से वापस आ रही है। तो यह एक प्रक्रिया है। जो निरंतर चलती रहती है। कहीं कोई आगे तो कोई पीछे कोई पीछे तो कोई आगे यह इसका क्रम हैं।

कई बार किसी वाद या विचारधारा को लेकर कई तरह की भ्रांतिया फैला दी जाती है। उसके उज्ज्वल पक्ष में भी अंधेरा ही देखने की कोशिश की जाती है। यह सर्वथा प्रायोजित होता है। या नासमझी का परिणाम। आधुनिकता व परंपरा के साथ भी यह हुआ। और कई बार हुआ। कोई परंपराओं को कोस रहा है तो कोई आधुनिकता को। या आधुनिक विचारों को, आधुनिक जीवन पद्धतियों को।

आधुनिकता व परंपरा की शुरुआत एक ही जगह से हुई है। मनुष्य के जीवन का विकास जिस बिन्दु से शुरू होता है। और उसका जो विकास होता है। उस विकास की प्रक्रिया में मनुष्य के हाथ खोज के रूप में जो पहली वस्तु लगी होगी वह उसके लिए आधुनिक ही थी। और फिर जीवन के इस विकास में उसने बहुत कुछ नया अर्जित करते गया। तो जो लगातार नया अर्जित कर रहा है वह उसके लिए आधुनिक ही है। और जो जीवन में पहले आया और वह किसी न किसी रूप में आता चला आ रहा है तो वह परंपरा है। यानि आधुनिकता की कई पीढ़ियों के बाद परंपरा बन गई। तो आधुनिकता व परंपरा का केंद्र बिन्दु एक ही हैं। कबीर अपने समय के सबसे आधुनिक व्यक्ति है। लेकिन आज कबीर के पंथ की एक परंपरा चल गई है। यानि जो अपने समय में आधुनिकता है वह आगे चलकर परंपरा का हिस्सा हो सकता है। परंपरा बन सकता है।

हिंदी साहित्य में आधुनिकता शब्द बीसवीं शताब्दी का एक मुख्य शब्द है। आधुनिकता शब्द चिर नवीनता का बोध कराने वाला भी शब्द है। यह निरंतर गतिशील क्रिया है जो काल निर्मित कालातीत और कालजई है। जिसमें स्वीकृत मूल्यों मान्यताओं और धारणाओं का सामान्यतया विरोध का स्वर होता है, और एक नई परंपरा के निर्माण के क्रिया भी। जिसमें वह खुद को ढलती एवं निर्मित करती रहती है का स्वागत। आधुनिकता को विद्वानों ने इस रूप में परिभाषित किया है- डॉ हरी चरण शर्मा जी कहते हैं कि "आधुनिकता सर्वदा मानवीय प्रगति की सूचना देती है जो परिवेश को अपने में समेटे हुए चलती है।"1 आधुनिकता के संदर्भ में कई बार विद्वानों को ऐसा लगता है कि आधुनिकता परंपरा से बिल्कुल नई चीज होती है। जिसका परंपरा से कोई संबंध नहीं होता है परंतु ऐसा नहीं है। आधुनिकता परंपरा को एक सिरे से खारिज करने का नाम नहीं है बल्कि जो रीति-रिवाज, परंपराएं, रूढ़ियां समाज के प्रगति में बाधक है और वह समाज के पैरों में जंजीर की तरह जकड़ी हैं। जिनका समाज में कोई औचित्य नहीं है समाज उन्हें रीत-रिवाज व परंपरा के नाम पर निर्वहन कर रहा है। ऐसी रीत-रिवाज व परंपरा को खारिज कर नए विचार व्यवस्था एवं परंपराओं का अनुसरण करना हुए हैं आधुनिकता की पहचान है। डॉ हरी चरण शर्मा का विचार हैं कि "आधुनिकता का वास्तविक अर्थ है विगत सांस्कृतिक मूल्यों को अपने अंदर समेट कर मानव की वर्तमान स्थिति और उसके भविष्य दायित्व की सक्रियता और चेतना को स्वीकार करना आज का संघर्ष कामिनी जीवन में मनुष्य की संवेदना कुछ दूसरे और नए ढंग से अनुभव कर रही है अनुभूति और संवेदना का नया पर आधुनिकता का ही अंग है।"2

हर समय अपने पुराने समय से कुछ न कुछ नयापन और नए स्वरूप के साथ नए विचार नए भावबोध के साथ आता हैं। इसे साहित्य में भी हम देख सकते है। हिंदी साहित्य का प्रत्येक कालखंड अपने क्रमिक विकास में पीछे वाले कालखंड की अपेक्षा नवीन है। नए विचारों नए भावबोध निर्मित है। और मानव सभ्यता संस्कृति सदैव गतिशीलता के संदर्भ में आधुनिक ही होती है। यदि वह जड़

हुई तो यह उसकी समाप्त होने का संकेत है। नंददुलारे वाजपेई कहते हैं "आधुनिक युग बोध प्रगति और विकास का परिचायक है, सभी आधुनिकताएँ सापेक्षिक होती है।"3

रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं, “आधुनिक मनुष्य अपने चिंतन में निर्मम होता है। निष्ठुर और निर्भीक होता है। जो बात बुद्धि की पकड़ में नहीं आ सकती उसे वह त्रिकाल में स्वीकार नहीं करेगा। और जो बातें बुद्धि से सही दिखाई देती हैं उनकी वह खुली घोषणा करेगा। चाहे वह धर्म के विरुद्ध पड़ती हो, नैतिकता के खिलाफ जाती हो और उनसे मानवता का चीर पोषित विश्वास खंड-खंड हो जाता है।”4 महावीर दधीच ने लिखा है, “आधुनिकता का स्वयं में कोई मूल्य नहीं है। बल्कि मशीन, राजतंत्र और आर्थिक व्यवस्था के पंजों में कुचले जा रहे आज के मानव के अस्तित्व संकट और मूल्य संकट की अनुभूति चेतना है।”5

समाज में जो भी बदलाव आ रहा है उस पूरे बदलाव को हम आधुनिकता ही नहीं कह सकते है। कारण यह है कि आधुनिकता के नाम पर तो कहीं-कहीं समाज इतना प्रदूषित हो चुका है कि, उसे हम आधुनिकता नहीं बल्कि अपसंस्कृति कहेंगे जो आधुनिकता के नाम पर प्रचारित, प्रसारित एवं व्यवहृत हो रही है। इसका अंधानुकरण भी खूब जमकर हो रहा है। यह प्रदूषण शहर से लेकर गांव तक फैला हुआ है। इस प्रदूषण को हम आधुनिकता तो नहीं कर सकते हैं बल्कि आधुनिकता वह है जो एक सुदृढ़ एवं सुंदर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हुए हमें नए विचारों से जोड़ते हुए ले चले। रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है कि "आधुनिकता ने मनुष्य के सुख को बढ़ाया है लेकिन उसकी भी अपनी शांति घट गई है।"6

डॉक्टर इंद्रनाथ मदान के शब्दों में “आधुनिकता इतनी पास है कि, इसे तटस्थ दृष्टि से आंकना कठिन जान पड़ता है। आज इस शब्द के इस्तेमाल की बाढ़ सी आ चुकी है और पत्रकारों और

पत्रकार आलोचकों ने इसे इतना दूषित कर दिया है कि इसकी बात करने में थोड़ी झिझक महसूस होती है।"7

दिनकर जी के अनुसार “आधुनिकता का कोई शाश्वत मूल्य नहीं है। यह तो समय सापेक्ष धर्म है। आधुनिकता एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वास से आगे निकलने की प्रक्रिया है। यह नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह बुद्धि वादी बनने की प्रक्रिया है।"8

गिरिजाकुमार माथुर ने कहा है कि “वस्तुतः आधुनिकता परिवर्तित बोध की वह स्थिति है। जिसका प्रादुर्भाव यांत्रिक तथा वैज्ञानिक विकास क्रम की वर्तमान बिंदु पर आकर हुआ है।"9

डॉक्टर राजकमल बोरा के अनुसार "आधुनिकता की सबसे बड़ी मांग विचार स्वतंत्र है। आधुनिकता की सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि व्यक्ति के विचार कुचल दिए जाते हैं। इसी से छटपटाता है।"10

लक्ष्मी नारायण वर्मा ने लिखा है कि “आधुनिकता मूलतः गुणात्मक बोध है। नितांत समसामयिकता का बोध, क्षण के यथार्थ के प्रति दायित्व, आत्मनिश्चय का दायित्व, व्यक्ति की पारस्परिक आत्मा-निष्ठा के प्रति आस्था, संगति और व्यक्ति स्वतंत्र के सह-संबंध को विकसित करने की क्रियाशीलता ही आधुनिकता में परिलक्षित होती है।"11

धनंजय शर्मा के अनुसार "निरन्तर नए होते चलने की गतिशीलता ,चेतना और वृत्ति आधुनिक कही जाएगी जिससे बदलते परिवेश से संपृक्त व्यक्ति के नए अनुभवों और प्रयोगों के प्रति स्वस्थ दृष्टि उपजती हैं। नए उन्मेष और परिवर्तन जीवन के हर क्षेत्र में नए आयामों और प्रवृत्तियों को वह केवल शंका और विरोध की नजर से नही,बल्कि सामाजिक और जीवन संदर्भ में उनकी अनिवार्यता और सार्थकता की तलाश करता हुआ उन्हें उदार दृष्टि देती हैं।”12

डॉ.रामस्वरुप चतुर्वेदी का अभिमत है कि “नवीन परिस्थितियों के संदर्भ में अपने आपका संस्कार करते चलना ही आधुनिकता हैं।”13

आधुनिकता कोई ऐसी खास चीज नही हैं कि, आज का समय आधुनिक हैं तो उसमें सब आधुनिक ही होगा। आज भी बहुत से लोग पुरातनता को महत्त्व दे रहे हैं। और जहाँ तक उनका बस चलता है आधुनिकता का विरोध करते है और उसे नकारते हैं। पर जहाँ बस नही चलता उसे दबे हुए सकुचाते मन से स्वीकार करते हैं। और एक स्वीकार के बाद लगातार स्वीकार करते चले जाते है।

आधुनिकता के संदर्भ में अक्सर भारतीयों का यह मानना है कि यह पश्चिम की चीज हैं। पश्चिम की विचारधारा है। यह पश्चिम से आयायित है। अगर यह बात सत्य है तो क्या हम यह मान ले कि भारत में कभी कोई नयी चीज, नयी बात व नयें विचारों का उदय नहीं हुआ है। और भारत में जो कुछ भी नया है सब पश्चिम से आयायित है। यह भारत के ज्ञान-विज्ञान से लेकर चिंतन परंपरा उसके नवीन उद्‌भावना पर आदि पर एक प्रश्न चिन्ह हैं। और इसके साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि क्या भारत की समृद्‌ध ज्ञान-विज्ञान, चितन की परंपरा आधुनिक कल मे आकर सूख जाती है। नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है। भारत की आधुनिकता भारत में ही विकसित हुई है। और इसके तमाम सबूत हमारे पास हैं। जैसे कि यदि हम सिंधु घाटी सभ्यता की बात करें तो यह सभ्यता अपने समय की सबसे उन्नत सभ्यता थी। विश्व में इससे ज्यादा विकसित दूसरी कोई सभ्यता नहीं थी। यह हमारी उन्नति का प्रतीक हैं। इसके बाद यदि हम कबीर नानक रैदास नामदेव गांधी टैगोर राजाराम मोहन राय विवेकानंद केशवचन्द सेन एनी बेसेंट अंबेडकर आदि महापुरुषों को देखे तो अपने समय में बड़े-बड़े परिवर्तन लाए। और कोई भी परिवर्तन समाज के सामाजिक संरचना के भीतर से ही होता हैं। और सब महापुरुष भारतीय समाज के संरचना के भीतर से ही परिवर्तन कर रहे है। उसके भीतर समय के साथ बदलते हुए नयें विचारों का सृजन कर रहे है। समाज को नयें विचारों से सुसज्जित कर रहे है। नयें समाज का निर्माण कर रहे है। यह सब किसी

भी अर्थ में आधुनिकता से कम नहीं है। और ये सब जीतने भी महापुरुष है इन सबके विचार अपने मौलिक विचार है। या भारतीय ज्ञान परंपरा में जो सर्वश्रेष्ठ है उसे लोगों तक ले जाने का काम करते है। इन महापुरुषों के द्वारा समाज मे जो परिवर्तन लाया गया यह अपने आप में बहुत बड़ी आधुनिकता थी। और यही सच्ची भारतीय आधुनिकता है। इससे इतर पश्चिमी खान-पान, वेशभूषा, बात व्यवहार, जीवन के दूसरे पक्षों आदि का जो प्रभाव हम पर हुआ यह पश्चिम की बढ़ती हुई सभ्यता का प्रभाव है। इसे हम भारत की आधुनिकता का हिस्सा नहीं कह सकते। और यदि इसे ही हम भारत की आधुनिकता कहते है तो फिर हमारे महापुरुषों के द्वारा समाज में किए गए सुधार, भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा सब पर प्रश्न वाचक चिन्ह है कि फिर यह क्या है। या यह सब किसी काम का नहीं है। उसका कोई मूल्य नहीं है।

भारतीय समय के हिसाब से यदि हम आधुनिक काल खंड को देखे तो यह कलियुग है। और कलियुग उसे ही कहाँ गया है जहां सब बेतरतीब होगा। असंगत होगा। तो दिख तो वही रहा है। और इसे ही हम आधुनिकता कहते है। और इस असंगति की उद्घोषणा गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस में कर चुके है। तो यह पाश्चात्य की धारा नहीं बल्कि हमारी अपनी ही धारा उत्तरवर्ती रूप है। यह स्वीकार करने में हमें कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। इस अर्थ में भी जो कुछ भी आज हम अपने समाज मे देख रहे है और जिसे हम आधुनिकता कहते है वह पाश्चात्य की नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता-संस्कृति का स्वाभाविक विकास है। और यह पूर्णतया भारतीय दृष्टिकोण है।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति विश्व की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति में से एक है। जो पूर्णतः नगरीय व विकसित सभ्यता थी। यह नगरीय व विकसित सभ्यता निश्चित ही अपने समय मे आधुनिक रही। सभ्यताओं का विकास एक क्रमिक विकास होता हैं। धीरे-धीरे उनमे नवीनता व नयेपन का आना स्वाभाविक विकास की क्रिया हैं। आधुनिकता पर पाश्चात्य का प्रभाव मात्रात्मक रूप में कुछ

हो सकता हैं। किंतु पूर्णरूप से यह विदेशी धारणा या विदेशी विचारधारा नही हैं बल्कि भारतीय सभ्यता व संस्कृति के क्रमिक विकास का विकसित नवीन रूप हैं। जो तार्किक, वैज्ञानिक, विचारपूर्ण व नवीन है। पाश्चात्य प्रभाव के संदर्भ में हम इतना जरूर कह सकते हैं कि, पाश्चात्य प्रभाव से भारतीय सभ्यता में आधुनिकीकरण की क्रिया तेज हुई पर पूर्णतः यह पाश्चात्य धारणा नही है। हा उसके प्रभाव से बहुत कुछ हम सीखे हैं तो बहुत कुछ हम उच्छृंखलता व बिगड़े भी है। यह कहने व यह स्वीकार करने में हमे कोई हिचक नहीं है।

आधुनिकता का लोक जीवन पर प्रभाव

लोक जीवन हो या शहरी जीवन आधुनिकता हर जगह एक विचार व पदार्थ की तरह अपना स्थान ग्रहण कर चुकी है। यह आधुनिकता की पकड़ व पहुँच है। जिसके कारण समाज में वैचारिक व पदार्थगत रूप से एक जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। कारण यह भी है कि नवीन ज्ञान-विज्ञान व औद्योगीकरण के चलते जो नयी चीजें आयी, वह लोगों को ज्यादा सुविधाजनक लगी। यह सुविधा ही भौतिकतावाद है। सुविधाभोगी होना भौतिकवादी/भौतिकतावादी होना है। और भौतिकवादी होना आधुनिकता की पहली शर्त है। और यह भौतिकता क्या गाँव, क्या शहर हर जगह अपना पाव पसारी चुकी है। हर जगह अपनी पकड़ मजबूत किए हुए है। इस बढ़ती हुई भौतिकता, बढ़ते हुए नए तौर-तरीकों का अंधड़ इतना तेज है कि पुराना विचार हो या पदार्थ सबका अस्तित्व इसके समक्ष संकटमय हो गया है। और इसके समक्ष पुरातनता स्वयं को बचाने में बहुत कमजोर पा रही है। इस तरह से बदलते हुए विचारों के मध्य जो तनाव उत्पन्न हो रहा है। जो दबाव महसूस होता है। वह इस द्वन्द्व के मध्य ही है या इस द्वन्द्व के कारण ही है। लोक जीवन समाज या सामाजिक विचारों से निरपेक्ष नहीं होता है। किन्तु लोक जीवन के विश्वास को खंडित कर पाना काफी मुश्किल काम होता है। लेकिन यह होता है। यह नितांत असंभव नहीं है। इसी रूप में आधुनिकता का प्रभाव लोक जीवन पर होता है लेकिन उसके प्रभाव की गति बहुत मंदिम होती है।

व्यक्ति या समाज किसी वस्तु या विचार को जितनी जल्दी व आसानी से अपना लेता है वह उसी गति से उसका त्याग भी करता है। लोक जीवन पर आधुनिकता का प्रभाव गहरा है। और यह प्रभाव बहुत तेज गति से हुआ लेकिन उसके साथ उसका मोहभंग भी होता रहा। आधुनिकता का प्रवाह इतना तेज है कि उसके समक्ष परंपरागत विचारों का टिकना असंभव सा लगता है। और द्रुतिगती से प्रवाहित आधुनिकता के रंग में समाज रगता हुआ चला जाता है। यानि आधुनिकता को समाज अपने अनुकूल नहीं बल्कि आधुनिकता समाज को अपने अनुकूल बना रखा है। और यही प्रतिकूलता आज के मनुष्य जीवन को तंग कर रखी है। आज मनुष्य हर स्तर पर जैसे किसी न किसी प्रतिकूलता से जकड़ हुआ है। यह प्रतिकूलता आज के लोकजीवन पर आधुनिकता के प्रभाव के चलते पैदा हुई वस्तु है। लोक जीवन सदैव से परंपरा जीवी होता है। उसे जितना भरोसा अपने वैद्यकी पर होता है उतना भरोसा उसे डाक्टर के सुई व दवाओं पर नहीं होता है। उसे बड़े से बड़े डाक्टर के दवा के साथ तंत्र-मंत्र, झाड-फूक पर भी पूरा भरोसा होता हो। और वह किसी नयें विचार या वस्तु को अपनाते हुए अपने पुराने से उसकी तुलना जरूर कर लेता है। यानि आधुनिकता की तरफ उसका झुकाव है लेकिन उसे भरोसा ज्यादा अपनी परंपरागत चली आ रही व्यवस्था पर ज्यादा है। जैसे असाध्य रोगों के इलाज के लिए अंततः उसे अंग्रेजी दवाओं के पास जाना ही पड़ता है। ठीक इसी तरह से आधुनिकता है कि अंग्रेजी दवा की तरह है कि वैद्यकी परंपरा में भरोसा रखने वाला लोक जीवन भी अंततः आधुनिकता के साये से मुक्त नहीं है।

लोक जीवन में तमाम ऐसे प्रभाव आधुनिकता के कारण आ रहे है जो कभी लोक में नहीं थे। जैसे लोक उत्सव, लोक त्यौहार, लोक नीति, लोक रीति, परम्पराएं सब पर आधुनिकता का गहरा प्रभाव लक्षित होता है अब तो जिसके कारण ही अब उनके रूप स्वरूप में अनेकानेक परिवर्तन आ चुका है। बाजार इन सब पर पूरी तरह से हावी हो चुका है। पूंजी इन सबको अपने नियंत्रण में रख लिया है। यह बाजारवाद, पूंजीवाद आधुनिकता के सब रूप है। और इन सबसे लोक जीवन पूरी तरह

आक्रांत है। इस रूप में भी आधुनिकता का गहरा प्रभाव लोक जीवन, लोक रीति, लोक नीति पर है।

जीवन दृष्टि में बदलाव

आधुनिकता एक नवीन विचार व दृष्टि है। जो जीवन को नयें नजरिए से देखने की आग्रही है। आधुनिकता जीवन के बने-बनाए ढांचे को तोड़ती है। और यह तोड़ने का कार्य संरचना व विचार दोनों स्तरों पर होता है। आधुनिकता के चलते जीवन और समाज में परिवर्तन होता है। जिससे समाज व व्यक्ति में एक तीव्र गति की हलचल पैदा होती है। इस हलचल में व्यक्ति धक्के बहुत खाता है। संघर्ष करता है। अकेला पड़ता है। घर परिवार टूटते व झूटते है। पूंजी व बाजार के चलते उभरे हुए आर्थिक युग ने उसे धनाढ्य बनने के लिए विवश करता है। और इन सब क्रम में व्यक्ति से अधिक व्यक्ति के लिए पैसा व भौतिकता महत्त्वपूर्ण होती नजर आती है। और समाज व व्यक्ति जैसे-जैसे पैसा व भौतिकता पर केंद्रित होता जा रहा है वैसे-वैसे उसमे संकीर्णता घर करती चली आ रही है।

तीसरा आदमी उपन्यास बदलते हुए जीवन दृष्टि का ही उपन्यास है। समाज एक नए तरह के विचार को ओड़ रहा है। जीवन की शिराएं टूट रही है। मनुष्य खंड-खंड होकर टूट रहा है। उसके घुटन भारती जा रही है। आत्मीयता खत्म होकर उसमें कटुता का प्रवेश हो रहा है। पति-पत्नी के मध्य किसी तीसरे का आगमन हो चुका है। यह सबका सब बदलते हुए जीवन दृष्टि का ही परिणाम है। यह बदली हुई जीवन दृष्टि ही है। नरेश कहता है कि “हर वक्त एक तीसरी छाया मंडराती रहती है...ऐसा लगता है कि ‘मुझ’ और हर चित्रा के बीच वह छाया खड़ी है...जब भी, कोई भी, किसी भी चित्रा के आँखों में झाँकने की कोशिश करता है तो लगता है कि जैसे दो नहीं, चार आँखे झांक रही हैं...चार बाँहें उस चित्रा को कस रही हैं- चार होंठ उसे प्यार कर रहे हैं।”14

डाक बंगाल उपन्यास की इरा बहुत ही स्पष्ट साफ-सुधारे व तर्क पूर्ण विचार रखने वाली एक उन्मुक्त लड़की है। लेकिन अपनी उन्मुक्तता के चलते वह जीवन में बहुत धक्के खाती है लेकिन वह कभी किसी को उसके लिए दोष नहीं दिया। इरा अपना जीवन स्वेच्छा व मजबूरी में कई पुरुषों के साथ बिताती है। जिसमें वह विमल, बतरा, डाक्टर व सोलंकी के जीवन में क्रमशः आयी लेकिन उसे कहीं भी अपनी सार्थकता नहीं महसूस होती है। हर जगह वह स्वयं को अधूरी महसूस करती है। कहीं भी वह अपने पूर्णता को नहीं महसूस कर पति है। वह जहाँ भी होती है वहाँ उसे कुछ न कुछ अपूर्णता का बोध होता ही रहता है। “और मेरी जिंदगी की त्रासदी सिर्फ यही है की मुझे निरर्थक प्यार ही मिला...जो भी मेरी जिंदगी में आया उसने यही विलास किया मेरे साथ- क्यों कोई भी मुझसे खुलकर नहीं कह पाया कि जिंदगी की शर्ते प्यार से बड़ी होती हैं...सब यही कहते रहे की प्यार जिंदगी से बड़ा होता है...लेकिन प्यार को जिंदगी के मुताबिक काटते, सिलते और उधेड़ते रहे...।”15

पैसा समाज की केन्द्रीय धुरी है। पैसा कुछ करता हो या न करता हो व्यक्ति को सुखी-दुखी, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब व समाज में उसका स्थान उसकी इज्जत आदि को जरूर सुनिश्चित करता है। श्यामलाल दिल्ली जैसे शहर में रह रहे है और उन्हे बार-बार एहसास होता है कि व्यक्ति से अधिक पीस कीमती है। व्यक्ति की कोई कीमत नहीं होती मूल्य हो पैसे का होता है। वह कहता है “यही तो वह नहीं समझता...चार दिन में यहाँ बहुत फर्क पड़ता है। यह शहर ऐसा है कि बिना पैसे के यहाँ कोई पहचानता ही नहीं। पैसा पास है तो दुनिया अपनी है, नहीं तो कोई साला...।”16

जीवन दृष्टि का बदलवा समय के साथ होता आया है और यह समय के साथ होता रहेगा। इसके लिए व्यक्ति जिम्मेदार नहीं बल्कि समय है। व्यक्ति तो समय के साये में उधर ही खिचता चला जाता है जिधर समय ले जाता है। कमलेश्वर जी के उपन्यासों में यह बदलाव किस रूप में व किस तरह से आया है उसे हम यहा देखा।

परंपराओं का निर्वहन

कमलेश्वर जिस समय में लिख रहे है वह समय भारतीय समाज में परिवर्तन का समय है। सभी तरह की सामाजिक संरचना में बदलाव की गति दिखाई पड़ती है। आदर्श का ढांचा टूटता है और यथार्थ बिना किसी दुराव-छिपाव के सामने आता है। हमारे परंपरागत विश्वास का ढ़ाचा टूटता है, हमारे रिश्तों का परंपरागत ढ़ाचा टूटता है। हमारे जीवन मूल्य बदल रहे है। हमारे जीवन की आशा-आकांक्षा बदल रही है। और जिस नजरिए जिस दृष्टिकोण से हम दुनिया को देख रहे होते है उसके अगले ही पल उसका रूप बदल चुका होता है। यह जो द्रुतगती से परिवर्तन हो रहा है। यह सब समाज में एक बड़े बदलाव किए है। कमलेश्वर के उपन्यासों में यह बदला हुआ रूप बहुत ही प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत हुआ है। जैसे तीसरा आदमी उपन्यास में नरेश। नरेश बदलते हुए समाज में बीच में उलझ हुआ व्यक्ति है। एक तरफ वह बहुत मुक्त होना चाहत है लेकिन दूसरी तरफ वह परम्पराओ से बधा भी है। "मन में भावनाएं तो बहुत उमड़ रही थी, पर अजीब-सा लिहाज खाए जा रहा था। हमारे घरों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। काफी पढ़-लिख लेने के बावजूद अभी आँख में शर्म बाकी थी, और इतना लिहाज करना जरूरी भी था।"17 नरेश के मन में इस तरह के भाव काफी प्रबल है। वह चाहता कुछ और है पर उसके हाथ-पाँव जैसे अपनी आदर्श व नीति गत बातों से बधे है। नरेश के अंदर अपने परंपरागत संस्कार बचे हुए है। वह बड़े बुजुर्गों का सम्मान करते हुए अपनी पत्नी के साथ ट्रेन में नहीं बैठता है बल्कि पत्नी के पास सुमंत को बैठा देता है। और वह कहता है "प्लेटफार्म की रौनक बिखरती जा रही थी। मैं निगाह बचा-बचाकर चित्रा को ताक रहा था और में कहीं यह लग रहा था कि इस तरह खड़े रहना ठीक नहीं।"18 और नरेश के पारिवारिक जीवन में यह नीति व आदर्श की बातें कहीं भी शेष नहीं है। उसके जीवन की पूरी घटना ही नीति-रीति, आदर्श परंपरा के खिलाफ जा पड़ी है।

नरेश का परिवार भी परंपरागत ढंग से सोचने वाला परिवार है। या हम कह सकते है की एक सच्चे भारतीय माँ-बाप है। भारतीय समाज में हर-बाप की यही इच्छा होती है जो इच्छा नरेश की माँ उसके पिता से बयां करती है। वह कहती है “देखिए शादी तो नरेश की बिरादरी में ही करनी है। और हमे औसत लड़की चाहिए- लंगड़ी-लूली, कानी-बहरी न हो, बस चेहरा-मोहरा अच्छा हो, देखने में...रंग उन्नीस भी हो तो कोई बात नहीं...हमें तो ऐसी चाहिए जो घर में निभ जाए...।”19

परंपरा का मतलब सब कुछ खराब नहीं होता है। परंपरा में बहुत कुछ बहुत उच्च स्तर का आदर्श होता है। बहुत कुछ बहुत अच्छा व मूल्यवान होता है। बहुत कुछ जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला होता है। और बहुत कुछ व्यक्ति को, समाज को सुंदर बनाने का गुन भी उसमे होता है। और मनुष्य कितना ही क्यों न बदल ले अपने अप को लेकिन कहीं न कहीं कुछ न कुछ परंपरा का अंश शेष रह जाता है। इस बदलते हुए समय में जहाँ परम्पराएं बहुत तेज गति से बदल रही है ऐसे समाज में परम्पराएं शेष है कमलेश्वर उसे अपने उपन्यासों में दिखाया है।

रूढ़ियों का नकार

जब से दुनिया पर पूंजीवाद, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, आधुनिकतावाद, भौतिकतवाद इत्यादि वादों का जब से चलन हुआ तब से व्यक्ति व समाज इन सब वादों के विचारों के अनुसार चेतनशील हुआ। इन वादों ने अपनी चेतना से लोगों को आक्रांत किया। उसकी चेतना का विस्तार किया। और समाज को बजरवादी, पूंजीवादी, भौतिकवादी बनाया। और इन सबकी पहली शर्त थी। रूढ़ियों का नकार। यानि रूढ़ियों से मुक्त होकर ही हम इन सब वादों का अनुकरण कर सकते है अन्यथा हम इनसे पीछे छूट जाएगे। चूंकि कमलेश्वर ऐसे समय में साहित्य में सक्रिय है जब व्यक्ति व समाज इन सब वादों से जकड़ा हुआ है । ऐसी स्थिति में कमलेश्वर के विचार अनावश्यक रूप से रूढ़िवादी नहीं है और अनावश्यक रूप से प्रगतिवादी बल्कि उनका विचार संतुलित विचार है। जिसके

चलते वे रूढ़ियों को नकारते चलते है। रूढ़ियों को नकारने की प्रवृति कमलेश्वर में बाद में विकसित होती है। प्रारंभ में वे इसका एक आदर्श हल दे देते थे।

कमलेश्वर जी का वैचारिक जुड़ाव संत काव्य परंपरा से बहुत गहरा है। वे संतों के वैचारिकी को अपने लेखन का आधार बनाया है। और बहुत कुछ संत काव्य की तरह ही स्पष्ट लिखनी की कोशिश की है। यही कारण है कि वे कई बार उन सब मुद्दों पर बहुत स्पष्ट हो कर लिखते है जिन विषयों पर लिखने से लोग कतराते है। यानि जो अति संवेदनशील मुद्दे है।

रूढ़ियों के नकार को हम कमलेश्वर के उपन्यासों में इस तरह से देख सकते है कि वे एकदम किसी क्रांति की बात नहीं करते है किसी नेता या राजनेता की तरह। वे एक साहित्यकार की दृष्टि से उन बातों को अपने पात्रो के द्वारा नहीं करवाते है जिसमें उनके पात्रों की सहमति नहीं है। जैसे तीसरा आदमी उपन्यास हो या वही बात उपन्यास हो या काली आंधी तीनों उपन्यासों में स्त्रियाँ अपना परंपरागत या रूढ स्त्री के लिए रूढ हो चुकी मान्यताओं को खंडित करते हुए पति का साथ छोड़ कर वे अपने जीवन का चुनाव स्वयं करती है। यानि रूढ हो चुके स्त्री रूप को खंडित करते है। चित्रा, समीरा व मालती पत्नी के रूढ हो चुके रूप को नकार देती है। और तीनों अपने जीवन की शुरुआत अपने स्तर से करती है।

रूढ़ियों को नकारना हर समय में होता आया है। रूढ़ियाँ इसी समाज में किसी विशेष समय में किसी विशेष प्रयोजन से उपज आती है। और समय के साथ उनकी सार्थकत खत्म हो जाती है। खत्म हुई सार्थकता वाली परम्पराएं ही रूढ़ियों का रूप ले लेती है। और कई बार समाज य व्यक्ति अपनी अर्थवत्ता खो चुकी ऐसी चीजों को ढोता रहता है। लेकिन समय के साथ इन निरर्थक बातों को लोग नकारना शुरू कर देते है। कमलेश्वर इन नकारी जाती हुई रूढ़ियों को अपने उपन्यासों मे दर्ज करते है।

मूल्यों का हास

समाज जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे मूल्यों का हास बढ़ता जा रहा है। स्थितियाँ यहाँ तक बढ़ गई है कि अब तो छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, बेईमानी आदि दुस प्रवृतियों को भी मूल्य माना जा रहा है। मनुष्य की मौत पर लोगों को दुख नहीं बल्कि खुशी होती है। मातम का जश्न मानते है। तो समाज में मूल्यों का हास हुआ है। और दुस प्रवृतियों का प्रभाव बढ़ा है। हमारे पारिवारिक मूल्यों में, मानवीय मूल्यों का पतन हुआ है। स्थितियाँ ऐसी हो गई है कि अब हम किसी के दुख में दुखी नहीं बल्कि खुश होते है। और यह मूल्यों का अवमूल्यन मनुष्यता का अवमूल्यन है। कमलेश्वर अपने कहानियों में बार-बार इन सबकी बात करते है।

तिलक कहता है कि “न जाने क्यों, सामान्य स्त्रियों की भांति ऐसी बातों पर कोई हलचल नहीं आती थी, और नैतिक धारणाओं को बड़ी सरलता से नकार देती थी,जिन्हे मैं महत्त्वपूर्ण समझता था।”20

मूल्यों का हास जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा वैसे-वैसे मानवीय मूल्यों का हास सुनिश्चित है। और यही मनुष्य के विकास का कारण भी बनागे। आज सभी तरह के मूल्यों को नकारने की बात ज्यादा होती है अपेक्षा मूल्यों को स्वीकारने के। और कई बार हम बिना सोचे समझे बिना विवेक के कुछ भी फैशन या नयें के नाम पर करते है। मूल्यों का हास तो जैसे एक फैशन हो गया है। तो कमलेश्वर गिरते हुए को अपने उपन्यासों में उसकी नोटिस लेते है।

परंपराओं में परिवर्तन

परंपराओं का सिर्फ परिवर्तन ही नहीं हुआ है बल्कि परंपराओं का पुनरुत्पादन भी हुआ है। परंपराओं का परिवर्तन नवीन रूपों में हुआ है। समाज है व्यक्ति है बदलता हुआ समय है। बाजारवाद है, पूंजीवाद है, भूमंडलीकरण है, भौतिकतावाद है इन सब वादों के सापेक्ष हमारी क्या विश्वभर की

रीति-रिवाज परंपराओं में परिवर्तन हुआ। और यह लगातार जारी है। समाज इसे स्वीकार कर रहा है। आज मनुष्य का जीवन एक नया जीवन है। बाजार उस पर पूरी तरह से हावी है। बाजार जो चाह रहा है जैसा चाह रहा है वैसा व्यक्ति से करवा रहा है। जीने से लेकर मरने तक की सुविधाएं बाजार उपलब्ध करा रहा है। लेकिन कमलेश्वर इस बदलाव को रिश्तों के संदर्भ में विशेष रूप से देखते है।

तीसरा आदमी उपन्यास में नरेश व चित्रा पति-पत्नी है। और सुमंत दूर का संबंधी लेकिन सुमंत चित्रा से कहता है। "तुम लोगों के दिमागों में वही सती-साध्वी पत्नी का रूप बैठा हुआ है...पर दुनिया बहुत बदल गई है। संबंध बहुत बदल गए हैं...।"21 इसके प्रति उत्तर में चित्रा कहती है कि "होता होगा यह कहीं और...अपने लोगों में ऐसा नहीं होता...।"22 इन दोनों कथनों में वैचारिक द्वन्द्व है। यह द्वन्द्व ही आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व है।

डाक बंगाल की इरा अपने साथी विमल के लिए पिता से द्रोह करके घर से निकाल जाती है। इरा आधुनिक विचारों वाली लड़की है। वह जीवन के किसी पचड़े में पड़े बिना जीवन को खुल कर जीना चाहती है। लेकिन किसी भी व्यक्ति के लिए अवरोध की पहली आवाज घर से उठती है। और इरा के लिए भी यह आवाज उठती है। और यह आवाज विरोध की आवाज उसके पिता की थी। पिता परंपरावादी है। उन्हे दायरे में रहना प्रिय है। लेकिन इरा इसे आवश्यक नहीं समझती है। और जैसे कि किसी भी व्यक्ति के लिए पहला अवरोध घर से उत्पन्न होता है ठीक इसी तरह किसी भी व्यक्ति के नकार या विद्रोह का भी पहला स्वर घर से ही उठता है। इरा ने भी पिता के विचारों के खिलाफ जा कर पिता के मना करने के उपरांत नाटक के रिहर्सल के लिए विमल के पास चली जाती है। चूंकि विमल उसका प्रेमी भी है। और वह पिता से जीवन भर के लिए अपने सारे संबंध खत्म कर लिया। इरा कहती है "लेकिन डैडी ने विकराल रूप धारण कर लिया था। वे किसी शर्त पर मुझे जाने देने के लिए तैयार नहीं थे। कोई चारा नहीं रह गया था...आखिर मैं उनकी मर्जी के

खिलाफ नाटक की तैयारी के लिए विमल के पास लौट आयी थी। कुछ दिनों तो मैं अपनी एक सहेली के पास रही, पर वह प्रबंध भी कब तक चलता ? दुनिया दिखावे के लिए मैं कब तक अलग रहती ? उसमें रखा भी क्या था। मैं खुल्लमखुल्ला विमल के साथ रहने लगी थी। और डैडी से संपर्क-संबंध-सब कुछ टूट गया था।"23

व्यक्ति वैचारिक परिवर्तनों के चलते निर्णय ले रहे है। लेकिन वे निर्णय सही है या गलत यह समय तय करता है। निर्णय लेने के बाद कई बार व्यक्ति खुद में ही उलझ जाता है। उसे बहुत कुछ दुनिया जहान का अनुभव होता है। तब वह वैचारिक द्वन्द्व में होता है। इरा कहती है कि "मन, आत्म और शरीर उस समय एकदम झूठे पड़ जाते हैं जब आदमी के पास काम नहीं होता। सबकी निरर्थकता सामने आने लगती है। आत्म की उन्मुक्त उड़ान, मन का सौन्दर्य और शरीर का अबाध उपभोग तभी ताकत देता है जब व्यक्ति के पास कुछ करने को होता है।"24

भारतीय समाज में प्रेम विवाह अभी भी पारिवारिक स्वीकृति बहुत ही कम प्राप्त कर पाता है। और यह मात्रात्मक रूप से कम ज्यादा शहरी, कस्बाई, ग्रामीण के साथ पढे लिखे व अनपढ़ हर किसी के भीतर व हर जगह है। आरंभिक दौर में तो इसका विरोध होना ही है। बाद में यह भले ही येन केन प्रकारेण मामला सुलह जाए यह अलग बात है। और इसके साथ ही विवाह के पूर्व सहवास का जीवन भारतीय परंपरा में मान्य नहीं है। लेकिन बदलते समय, समाज व परिवेश में धीरे-धीरे सब प्रचलित व मान्य हो रहा है। यह नयी पीढ़ी का दबाव हो या पुरानी पीढ़ी की नरमी पर यह अब थोड़े बहुत ही रूप में पर हो रहा है। यानि भारतीय परम्पराएं टूटी। और उनकी जगह यह नयी परम्पराएं, नयी विचारधारा, नयी मान्यताएं अपनी जगह ले रही है। समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में तारा हरबंश से प्रेम विवाह करती है।

जीवन मूल्य बदल रहे है तो परम्पराएं भी बदल रही है। नयी परंपराओं का निर्माण हो रहा है। आजकल तो सबसे अधिक नयी परंपराओं का ही प्रचलन है। हर चीजों को आप कुछ अंतराल पर देखते है तो उसका रूप स्वरूप ही बदल जाता है। यह परिवर्तन हमे खान-पान, वेश-भूषा, बात व्यवहार, नाते रिश्ते संबंधों तक हर जगह देखते को मिल रहा है।

दो पीढ़ियों का द्वन्द्व

दो पीढ़ियों का द्वन्द्व भी कमलेश्वर के डाक बंगाल उपन्यास में व्यक्त हुआ है। इरा व उसके पापा में यह द्वन्द्व साफ तौर से स्पष्ट है। इरा नाटक में अभिनय करना चाहती है। उसमें उसकी रुचि बड़ी गहरी है और इसे वह अपने जीवन का आधार बनाना चाहती है। लेकिन उसके लिए के लिए यह सब नंगापन लगता है। वे इन सबका विरोध करते है लेकिन इरा उसे अस्वीकार कर देती है। यह सब बहुत कुछ बहुत जगह आज भी है। यह समाज की सच्चाई है। इरा कहती है कि "लेकिन मेरे इस विश्वास को डैडी नहीं समझ पाए थे। उनके लिए नाटकों में भाग लेना और नंगे होकर नाचने-गाने में कोई फरक नहीं था। वे कभी भी ये सब पाँसद नहीं कर पाए। लेकिन मैं अपने विश्वास को लेकर ही जीना चाहती थी। सचमुच कितनी प्यारी दुनिया है रंगमंच की। जिंदगी के सारे उतार-चढ़ाव, सुख-दुख, पाप-पुण्य, सब दो घंटों की परिधि में सिमट आते है।"25

दो पीढ़ियों का द्वन्द्व बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। हाँलकि यह समाज में रहा तो हमेशा से है पर जब से नए-नए वाद आए, मनुष्य की महत्त्वाकांक्षा बढ़ी है तब से पीढ़ियों का द्वन्द्व बढ़ गया है। और इसका कारण यह भी है कि आज सब कुछ बहुत तेजी से बदल रहा है। अब हर कोई जैसे अपने मन का ही सब कुछ करना चाहता है। वह अपने बीच में घर परिवार का जैसे हस्तक्षेप नहीं चाहता है। इस वजह से काफी द्वन्द्व दिखायी पड़ता है।

पारिवारिक परिदृश्य

पारिवारिक परिदृश्य की दृष्टि से कमलेश्वर के उपन्यासों का जब मूल्याकन किया जाएगा तो वहाँ पर परिवार टूटा, बिखरा व रिश्तों के तनाव को झेलता हुआ परिवार मिलता है। तीसरा आदमी हो, समुद्र मे खोया हुआ आदमी हो, काली आंधी हो, वही बात हो इन सब उपन्यासों में पति-पत्नी के मध्य संबंध बहुत ही तनावपूर्ण, त्रासद, बिखरे व तीसरा आदमी, काली आंधी व वही बात में तो अंततः पति-पत्नी के बीच के रिश्ते ही खत्म हो जाते है। तो पारिवारिक स्थिति बहुत ही असंतुलित व टूटी-बिखरी व उजड़ी हुई है। लोग अपनी स्नेह प्रेम के लिए तराश खा रहे है। संबंधों में अपनापन नहीं रह गया है। पति-पत्नी के रिश्ते का रूप खो चुका है। कमलेश्वर के इन उपन्यासों में। समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास का एक दृश्य है कि परिवार कैसे बिखरा हुआ है। अजनवीपन से भरा हुआ है। “परिवार इतने छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गए हैं कि आदमी की खुशियां या दुखों का विस्तार सिमट आया है-अब सुख में दस या दुख में बीस जन संवेदना प्रकट करने वाले नहीं रहे हैं। और इसलिए अब सुखों और दुखों की सह-अनुभूति के लिए दस या बी गुनी गहराई चाहिए।”26

“चूंकि रिश्तों को नया नाम नहीं दिया जा सकता, बाप-बेटी और माँ-बेटी ही कहे जाएगे, पर उनके बीच से कोई चीज अनजाने ही खो गई थी। हकों में कहीं कोई बड़ा फर्क आ गया था। लड़कियां-लड़कियां ही थी पर वे न तो पराई संपत्ति रह गई थी और न घर का बासन। पता नहीं उनमें कहाँ क्या उपज आया था, जो पहले नहीं था।”27 यह फर्क समय का फर्क है। यह परिवर्तन यह बदलाव समय का बदलाव है। यह होता रहा है और होता रहेगा। बस इसे हमे सहज होकर स्वीकारना होगा। वरना यह बातें दुख का कारण बनती है। जैसे की श्यामलाल दुखी है।

काली आंधी कमलेश्वर का एक राजनीतिक उपन्यास है। लेकिन इसके साथ ही यह महत्त्वाकांक्षा का भी उपन्यास है। व्यक्ति के सफलता का उपन्यास है। राजनीतिक छल-छद्म का उपन्यास है। और सबसे ऊपर परिवार के टूटने व बिखरने का भी उपन्यास है। मालती की राजनीतिक सफलता व उसकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा बहुत बड़ी है। और इस राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा के साथ वे अपने

पति जग्गी बाबू व बेटी लिली को भी अपने से दूर कर लेती है। मालती के पास सामाजिक जीवन के अलावा अपना व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन जीने का समय नहीं है। जीवन में असफलता की सीढ़ी सफलता होती है और असफलता की सीढ़ी सफलता होती है। मालती राजनीति में भले ही सब कुछ पा लिया लेकिन वह अपने परिवार को कभी नहीं पाया। वह चुनाव जीत कर अपने परिवार को हार गई है। जग्गी बाबू की नजर में मालती एक मशीन की तरह हो चुकी है। वे कहते है कि “मशीनें नहीं सोचती, मशीनों के लिए आदमी सोचता है ! और सफलता...सफलता सिर्फ एक मशीन हैं ! अब तुम औरत नहीं - एक सफलता बन गई हो ! अब तुम भी कुछ नहीं हो। सिर्फ एक सफलता रह गई हो...यही तुम्हारा एक मात्र रास्ता है...।”28

कमलेश्वर जिस समय में लिख रहे है उस दौर के कहानियों व उपन्यासों में इस तरह कहानियाँ व उपन्यास खूब लिखे जा रहे थे जो परिवार पर केंद्रित थे और उनमें संबंध बहुत की खराब, टूटे, बिखरे, अधूरे, भटके हुए, तनावपूर्ण, त्रासद स्थितियों का जिक्र है। यह उस दौर के लेखक की जैसे पहली पसंद बन गई थी की यह पारिवारिक पृष्टभूमि को केंद्र में रखकर पति-पत्नी के रिश्तों को आधार बना कर अपना लेखन किया। और इन सबमें बदला हुआ पति-पत्नी का रूप स्वरूप हमारे सामने आता है। कमलेश्वर के इन उपन्यासों में हमे वह सब देखने को मिलता है।

परंपरा के प्रति विद्रोह व नकार की भावना

कई बार समाज से बहुत कुछ नकार के द्वारा तो बहुत कुछ विद्रोह के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे कि बहुत कुछ आंदोलनों से प्राप्त होता है। कई बार व्यक्ति को कुछ चीजों के प्रति विद्रोह करना पड़ता है। विद्रोह का मतलब ही यही होता है कि जो द्रोह कर रहा है उस व्यक्ति की जिस भावना के प्रति द्रोह कर रहा है उसमें उसकी सासें घुट रही होती है। इसलिए वह छटपटकर विद्रोह कर बैठता है। कमलेश्वर के डाक बंगाल उपन्यास में इरा व विमल प्रेमी-प्रेमिका है। दोनों एक साथ

रहते है। लेकिन जिंदगी के संघर्ष से घबरा कर विमल इरा को अकेला छोड़ कर कहीं चला जाता है। स्त्री को उसके अपने हाल पर छोड़ कर अपने आप को हर परिस्थितियों से मुक्त कर लेना जैसे पुरुष का स्वभाव बन गया हो। पर अब ऐसी स्थितियों में स्त्री हताश परास्त हो कर अपने आप को खत्म नहीं कर लेती है बल्कि वह आने वाली परिस्थितियों का सामना करती है। अपने परिस्थितियों से लड़ती है जीवन में संघर्ष करती है। और अपने आगे के रास्ते का वह निर्माण करती है। और ऐसा करते हुए उनका अपना स्वाभिमान जिंदा रहता है। जीवन के विकत परिस्थितियों में विमल इरा को छोड़ जाता है। इरा कहती है "और एक दिन विमल मुझे अकेला छोड़कर कहीं चला गया।...अपनी पराजय और अकुलाहट को लियर हुए। कई बरस उसका पता ही नहीं चला।"29 विमल ने मेरी मजबूरी को नहीं समझा। फिर न विमल लौटकर आया न ही इरा को कोई खत लिखा। और न कोई पता। ऐसी ही घटना तीसरा आदमी उपन्यास में चित्रा व नरेश के मध्य में होता है। नरेश भी चित्रा को ऐसे ही दुख भरे दिनों में छोड़ कर घर चला जाता है। अपने हताश परास्त जीवन से दूर भागने की एक स्थिति सी जैसे पुरुषों ने पैदा कर ली है। इरा और विमल व चित्रा व नरेश के जीवन की स्थिति बहुत कुछ एक जैसी है। उनके जीवन की घटनाए व स्थितियाँ परिस्थितियाँ।

कमलेश्वर विवाह नामक संस्था के परंपरागत रूप के संदर्भ में भी कुछ बातें कहीं है। वे इस विवाह नामक संस्था की समीक्षा करते हुए कहते है कि "किसी को न चाहते हुए भी दुनियावी बातें ठीक-ठीक चलती रह सकती है। और शादी करने से कोई बहुत बड़ा फर्क नहीं आता, क्योंकि शादी से आत्मा का कोई संबंध नहीं है। अगर आत्मिक मिलन की ही बात होती तो शादियाँ करने की उम्र पचास के बाद होती। यह महज एक शारीरिक आवश्यकता है, जिसे आदर्श का ताज पहनाकर गरिमा प्रदान की गई है।"30 भारतीय समाज में जो आज भी परंपरागत विवाह में विश्वास रखता है। जिसके लिए विवाह सात जन्मों का संबंध हो। जो विवाह को ईश्वर द्वारा तय मानता हो उस

विवाह की इतनी कटु समीक्षा कमलेश्वर के लिए भी आसान नहीं रही होगी। लेकिन यह भी एक पुराने के समक्ष नया नजारियाँ है।

एक तरफ श्यामलाल है जो अपने घर में परंपरा की बात करते हुए अपनी दादी का उदाहरण दे रहे है कि "हमारी दादी ने तो पड़ोस के आदमियों की शक्ल तक नहीं देखी थी...देहरी के बाहर पैर नहीं रखा था। देवी-पूजा के लिए जब हम लोग जाया करते थे तब इक्कों में पर्दे बधते थे।"31 और एक तरफ श्यामलाल की बड़ी लड़की तारा है जो प्रेम विवाह करती है। यह श्यामलाल व तारा जैसे लोगों के मध्य का द्वन्द्व है। और यह एक तरफ आधुनिक विचारधारा तो दूसरी तरह परंपरागत विचारधारा का द्वन्द्व है।

विद्रोह व नकार समय व समाज के हिसाब से होता आया है। लोग आज भी कई चीजों के प्रति आक्रोशित है। बदलाव चाहते है। लेकिन साहस जो की विद्रोह व नकार के लिए सबसे जरूर चीज है। आज खत्म हो रही है।

महानगरी जीवन की समस्याएं

चूंकि कमलेश्वर महानगर के जीवन को बहुत करीब से देखते है। उस जीवन की संरचना को समझते है। उसकी धुरी को समझते है। और इस महनगरी जीवन के संबंधों को समझते है। व्यक्ति को समझते है और वहाँ के जीवन की समस्याओं को देखते व समझते है। महानगर में व्यक्ति के लिए पैसा सबसे बड़ी चीज है। पैसा है तो व्यक्ति के पास शहर में सब कुछ है और अगर पैसा नहीं है तो शहरिव्यक्ति के पास त्रासादपूर्ण जीवन के अलावा और कुछ नहीं है। कई बार रिश्ते होते है लेकिन विश्वसनीय नहीं होते। और कई तरह की चीजें होती है। कमलेश्वर के उपन्यासों में महानगरीय जीवन की जो मुख्य समस्याएं है वह इस तरह से है।

[क] अकेलापन

निदा फाजली साहब का एक शेर है-

हर तरफ हर जगह बे-शुमार आदमी।

फिर भी तन्हाईयों का शिकार आदमी।।

अकेलापन महानगरीय जीवन की एक बड़ी सच्चाई है। जहाँ सबसे अधिक व्यक्ति है वही मनुष्य सबसे अधिक अकेला है। वही मनुष्य सबसे अधिक एकांगी है। भीड़ में भी व्यक्ति अकेला है। मनुष्य पर मनुष्य सटा हुआ है फिर भी अकेला है। इस अकेलेपन के पीछे महनगरी जीवन के कई पहलू जिम्मेदार है।

डाक बंगाल उपन्यास में इरा कहती है कि “पता नहीं-कब लगा कि यह सब सपना है...हर जिंदगी एक डाक बंगला है...डाक बंगलों में पीली-पीली मोमबत्तियाँ जल रही हैं और दूर पर बहती नदियों का शोर है। चारों तरफ चीड़ और देवदार के जंगल हैं...अनगिनत पेड़ हैं, पर सब अपने में अकेले हैं।”32

इरा के पास सब कुछ है लेकिन उसके पास अगर नहीं है तो कोई उसका साठ निभाने वाला उसके जीवन में अकेलापन भर हुआ है। डाक बंगाल की इरा “रात को रोज यही अनुभूति मुझे सताती थी-कोई ऐसा हो जिसे मैं अपना कह सकूँ, नन्हा-सा घर बनाकर रहूँ, किसी के आने का इंतजार करू...।”33

समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास की समीरा दिल्ली जैसे महानगर में जाती है तो उसे वह पर जो अकेलापन व्यापात है वह उसे निगलने दौड़ता है। वह उस निहायत अकेलेपन से घबराती है। और उसे घर के लोग भी एक छाया की तरह लगने लगते है। जिनसे न बात की जा सकती है न अपने सुख-दुख कहे जा सकते है। समीरा कहती है कि “जब से परिवार दिल्ली आया था, उसे सब

लोग परछाई की तरह लगाने लगे थे। जिनसे दिल की कोई बात न की जा सके,जिनके साथ सुख-दुख और अकेलापन बटाया न जा सके, उन्हे सिवा परछाई के और क्या समझा जाए।"34

श्यामलाल अपने आप को असहाय, निरर्थक व्यक्ति के तौर पर पाते है। घर में ऐसा माहौल हो गया है कि घर में भी सब अकेले हो चुके है। बाहर तो सब है ही अकेले। इस स्थिति में व्यक्ति स्वयं अपने बाहर व भीतर से लड़ता है। श्यामलाल कहता है कि "वह सिर्फ एक फालतू चीज की तरह रह गए हैन, जिसे फैंका नहीं जा सकता, सिर्फ बर्दास्त किया जाता है। जिसे सहेजा भी नहीं जाता, सिर्फ होने को महसूस किया जाता है।"35 स्थितियाँ बहुत बदल चुकी है। हमरी परंपराओं में बहुत लंबा परिवर्तन आया है। यह वही समाज है। जहाँ राम का आदर्श दिया जाता है की पिता की आज्ञा का पालन करते हुए वनवास जाते है। जहाँ बच्चों को श्रवण कुमार को अंधे माँ-बाप की सेवा करते सुनाया जाता है। बताया जाता है। और आज उसी समाज में माँ-बाप उपेक्षित है। घर में उनके लिए जगह नहीं है। घर में बच्चे उनका कोई वैल्यू नहीं कर रहे है। अपने ही घर में वे फालतू की चीज बनकर रह गए है। श्यामलाल का दर्द यही दर्द है। और यह परिवर्तन आया है। पूंजीवादी समाज के कारण। आज के समय में आर्थिक विपन्नता व्यक्ति पतन के अपमानित होने के या श्यामलाल की तरह घर की फालतू की वस्तु बनने में बहुत सहायक है। "और तब उन्होंने करोड़ों-करोड़ों की भीड़ में अपने को खड़ा पाया- भीड़, जो सिएफ भीड़ है। जिसमें कोई किसी को नहीं पहचानता। वे सिर्फ एक-दूसरे को ऐसी नजरों से देखते हैं, जैसे पूछ रहे हो, तुम्हारे होने का मतलब ? क्यों...किसलिए ?"36 यह भीड़ उसमें अकेलापन और अपने होने का मतलब और मतलब है भी तो क्या और किसलिए है। कहीं मतलब सिर्फ फालतू चीज के लिए तो नहीं है। कई सवाल लेखक करता है।

घुटन

घुटन व्यक्ति को मारने दौड़ती है। उसे सताती है। उसे बेचैन करती है। महानगरों में व्यक्ति के पास घुटन भी है। महानगर के लिए एक तरह से यह अभिशाप है। कई बार तो व्यक्ति के पास सब कुछ होने के बावजूद घुटन है। और कई बार अभाव घुटन पैदा करता है। समुद्र में खोया हुआ आदमी समीर कहती है कि "इतने शोर और कोलाहल के बीच भी जैसे सब कुछ बहुत खामोश था। कभी-कभी तो इतनी गहरी खामोशी छा जाती कि उसका मन ऊबने लगता। जी होता कि वह मकान से निकले और सड़कों पर चीखती हुई भागती रहे। सचमुच जब अपनी आवाज ही आदमी को नहीं सुनाई देती, तब सिर्फ शोर बाकी रह जाते है।"**37**

तीसरा आदमी उपन्यास में नरेश व चित्रा दोनों कमरे के भीतर घुटते है। क्यों की उस एक ही कमरे में चित्रा व नरेश के साथ सुमंत भी रहता है। उस एक कमरे के घर के भीतर उनकी साँसे घुटती है लेकिन वे कुछ कर नहीं पाते है। काली आंधी के जग्गी बाबू भी घुटन में जी रहे है। वही बात की समीरा घुटन भरे जीवन को जीते जीते थक जाती है। और अंत में वह दूसरा विवाह कर लेती है इस तरह से कमलेश्वर के उपन्यासों में घुटन की व्याप्ति है। और ऐसा लगता है कि यह आज के समय की बड़ी त्रासदी है। सबसे अधिक आबादी वाले देश में लोग अकेलेपन व घुटन में जी रहे है तो। हमे अपने भीतर भाईचारे, सहृदयता, प्रेम आदि मानवीय मूल्यों को बचना होगा। और हमें ठूठ नहीं बनाना है। हमें मनुष्य-मनुष्य के बीच एक अपनापन को विकसित करना होगा।

त्रासदी

मनुष्य जीवन में त्रासदी न हो यह तो संभव नहीं है। कोई न कोई किसी न किसी तरह की जीवन है तो त्रासदियाँ चलती रहती है त्रासदियाँ मनुष्य को झकझोरती है। उनके अंदर एक हलचल पैदा करती है। कई बार मनुष्य की तोड़ती है तो कई बार निडर व निर्भीक भी बनती है। इरा कहती है "आज में किसी के लिए बुरी औरत हो सकती हूँ, तिलक ! पर अगर उसी को अपना टन दे दूँ तो

बहुत अच्छी हो जाऊगी। चार दिन बाद वह मुझसे छिटककर अलग जा सकता है, पर कभी मुझे बुरा नहीं कहेगा, बल्कि अपने अहं में चूर होकर दया देने की कोशिश करेगा। वह मेरा मसीहा बनाने की कोशिश करेगा,क्योंकि तुम्हारे इस समाज में हर आदमी कुछ करने आता है और हर औरत कुछ भोगने आती है। इसलिए हर क्वारी माँ की कोख से प्यार भरे पापों ने जबरदस्ती संताने पैदा की है और उन संतानों को तुमने पैगंबर का दर्जा दिया है।"38 किसी भी सभ्य समाज के लिए, और उस सभ्य समाज के स्त्री के लिए इससे पीड़ादायक और क्या हो सकता है। जिस समाज में स्त्री की अपनी कोख स्वतंत्र न हो उस समाज में स्त्री अपने मुताबिक जीवन कभी नहीं जी सकती है। स्त्री के पेट में पल रहे गर्भस्थ शिशु पर स्त्री का अधिकार न हो। उस समाज में इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है। एक स्त्री व समाज दोनों के लिए।

इरा के जीवन की त्रासदी यह है कि वह उन्मुक्त जीवन को अपनाती है फिर भी अपने जीवन में वह नहीं पाती है जो वह चाहती है। और किसी भी मनुष्य के लिए यह सबसे बड़ी त्रासदी होती है। इरा कहती है कि "एक-एक आवाज पर मेरा मन रोता था...अंग-अंग से दुख के स्वर फूटते थे। मैं तपती रेट के दलदल में फंसी हुई थी। मेरा सब कुछ झुलसा जा रहा था...मेरी आत्मा मर गई थी। बावजूद अपनी हारों व निरशाओं के, जो कुछ मैं नहीं थी, वही बनती जा रही थी। मैं जानवर होती जा रही थी।भावनाओं की कोमल स्वर-लहरियाँ अब मन के किसी भीतरी कोने में भी नहीं गूँजती थी। मेरे शरीर पर नकली दांतों के दंश थे।"39

यह कैसा समाज है जहाँ स्त्री किसी के लिए सिर्फ वस्तु बनकर रह जाती है। एक स्त्री जीवन की त्रासदी को बयां करते हुए इरा कहती है कि "कहीं भी मैं टिकने न पाई, क्योंकि हर जगह एक ही मांग थी- अपने को बांटो।...तुम एक चीज हो...तुम्हारा रूप और यौवन ही तुम्हारी संपत्ति है।"40

वही बात उपन्यास के पात्र प्रशांत व समीरा तथा तीसरा आदमी उपन्यास के नरेश, चित्रा व सुमंत के जीवन में त्रासदी ही त्रासदी है। प्रशांत व समीरा के जीवन की विडंबना यह है की अत्यधिक सफलता अर्जित करने के बाद भी समीरा के जीवन में खुशी नहीं है। वह पति प्रशांत के नीरस जीवन से ऊब गई है। और प्रशांत को इस बात का कभी एहसास ही नहीं होता है क्योंकि वह अपनी सफलता में डूबा हुआ है। और अंत में समीरा जूनियर इंजीनियर नकुल से शादी कर लेती है। इसी तरह तीसरा आदमी उपन्यास में पारिवारिक त्रासदियों के चलते ही नरेश दिल्ली से पटना चला आता है। चित्रा दिल्ली में ही रह जाती है और सुमंत आत्महत्या कर लेता है। तीन जिंदगियाँ तीन तरह से बिखर जाती है। इससे बड़ी जीवन की त्रासदी क्या होगी है कि सब अपने-अपने दुख को ढ़ो रहे है। अपने-अपने जीवन से त्रस्त है।

कमलेश्वर ने विवाह का विश्लेषण अपने कई उपन्यासों में करते है। और वे यह नहीं मानते है कि विवाह हो गया तो व्यक्ति को सब कुछ मिल जाता है या विवाह को चुपचाप हर स्थिति में स्वीकार कर लेना चाहिए। तलाक व पुनर्विवाह की भी वे समीक्षा करते है। वही बात उपन्यास में नकुल से समीरा के लिए कहलवाते है कि "तुमने कोई पाप नहीं किया है। अगर शादी पवित्र है तो तलाक भी उतना ही पवित्र है। शादी के गलत हो जाने पर भी तलाक न लेना शायद गलत होता है...पर तुमने तो तलाक लिया है। शादी एक तरफा खेल नहीं है...और किसी की जरखरीद गुलाम नहीं है।" 41 नरेश कहता है कि "शायद इसका मतलब तब होता जब 'विवाह' का भी अर्थ होता। जिंदगी के संदर्भ में जब इस सामाजिक सस्था का कहीं कोई अर्थ नहीं रह गया है...वैवाहिक अपेक्षाओं की पूर्ति में संलग्न व्यक्ति कितना भद्दा और बेहूदा लगता है ! शायद इसलिए और ज्यादा कि विवाह का वह परंपरागत स्वरूप अब नष्ट हो चुका है..उसकी सामाजिक अपेक्षाएं बदल गई हैं।"42

जिस पीढ़ी पर न तो समाज का दबाव है न ही परिवार का वह पीढ़ी कई बार अपने रास्ते से भटकी हुई नजर आती है। पुरानी पीढ़ी पर यदि समाज का दबाव होता है और नयी पीढ़ी पर

परिवार का दबाव होता है। पुरानी पीढ़ी के लोग समाज के दबाव को नहीं तोड़ पाते है पर नयी पीढ़ी के लोग कई बार परिवार के दबाव को तोड़ कर उससे मुक्त हो जाते है। यह नयी व पुरानी पीढ़ी का अंतर है। कमलेश्वर के उपन्यासों में ज्यादातर आधुनिकता व परंपरा का प्रभाव हमें पारिवारिक या सामाजिक स्थितियों में ही देखने को मिलती है। आज रिश्ते हो, घर-परिवार हो या समाज हो हर किसी में परंपरा का निर्वहन भी है और आधुनिकता का समावेश भी है। इस निर्वहन व समावेश के मध्य ही इन दोनों के मध्य द्वन्द्व समाहित है। और यह दो पीढ़ियों व दो विचार धाराओं का द्वन्द्व है। समाज, घर-परिवार, लोग, रिश्ते सबके सब इसके प्रभाव में है। सब पर इसका प्रभाव है।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

2 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

3 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

4 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

5 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

6 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

7 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

8 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

9 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

10 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

11 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

12 डॉ.एस.आर श्रीकला कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकताबोध माया प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.111

13 डॉ.पी.ए.रघुराम समकालीन हिन्दी कविता और अस्मिता प्रकाशक गोविंद पचौरी जवाहर पुस्तकालय संस्करण 2012 पृ.71

14 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.208

15 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.227

16 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज संस्करण 2020 पृ.321

17 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.160

18 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.160

19 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.162

20 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.216

21 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.176

22 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.177

23 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.232

24 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ. 238

25 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.231

26 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.180

27 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.307

28 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.438

29 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.236

30 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.252

31 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.304

32 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.225

33 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.246

34 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.293

35 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.298

36 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.298

37 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.293

38 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.293

39 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.265

40 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.278

41 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.548

42 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.189